तशृँगारप्रधानते धीरललितजगआइ ॥ भयेरुधिरकी अधिकई धीरउधितकहिजाइ ५५६ धीरप्रधानलहेक हो नायकधीरउदात ॥ धीरप्रधानसोजानजिहि रसर ससतकीबात ५५७ ॥ धीरललित ॥ भूषणबसनबनाय बो उज्ज्वलताप्रियमित्त ॥ विषयलालसाजानिये धी रललितकेचित्त ५५८ ॥ धीरोधिता ॥ रोषघनोलघुदो षते गहिरोगरोअमर्ष॥निजसुखयशअस्तुतिकिये धीरो धितकोहर्ष ५५९ ॥ धीरोदात ॥ दानदयासतमानशुभ काजनमेंउतसाह॥प्रियाप्रेमयशधर्म्ममे धीरोदातहिचा ह ५६० ॥ धीरप्रधान ॥ तन्तुआनरुचिसन्तगुण धर्मा धर्मविवेक॥सोईधीरप्रधानहैं शय्याकीजिहिटेक ५६१ दिव्यादिकनायकलोकभेदतेकथनं । इन्द्रादिकयोग्यहैंमानुपजन अदिव्या ॥ अरजुनादियाजगतमें जानहुदिव्यादिव्य ५६२ ॥ नायककीगणना ॥ चारिभांतिपतिहैंबहुरि उप पतितीनिप्रमान ॥ द्वैवैसिकलीन्हेसकल नौविधिहोत निदान ५६३ उत्तमादिमेंगुनतसो सत्ताइसपुनिहोत॥ गुनेधीरललितादिमें हैंशतआठउदोत ५६४ गनेसक लजबभेदयह दिव्यादिकमेंजात ॥ तबचौविसअरुती निसै सबनायकठहरात ५६५ जैसीबरणीनायका तैसे नायकनाहिं॥जेवर्णनमेंउचितहैं तेईबरणेजाहिं ५६६॥ इतिनायकभेद । अथ दर्शनचतुर्विधि ॥ रतिआलम्बनहोत हैं दम्पतिदरशनपाइ ॥ यातेदरशननोधरो आलम्ब नयुतलाइ ५६७ सोदरशनग्रन्थनमते बरणतहैंकवि चारि ॥ श्रवणसपनअरुचित्रमें त्योंसौतुकनिरधारि

५६८श्रवणनहींदरशनबनै पैदीपतियुतिश्राइ ॥ यहर तिश्रालम्बनकरत तातेबरणोजाइ ५६९ ॥ श्रवणदर्शन उदाहरण ॥ जबतेमोहिंसुनायतू कहीकान्हकीबात ॥ त बतेद्दगखिगलौचलै काननहींकोजात ५७० तूतियश्र बिमदजोदयो श्रवणचषककोप्याइ ॥ मोसोंहीश्रतिश्र कतिकै मैननभूलीश्राइ ५७१ ॥ स्वप्नदर्शनउदाहरण ॥ जागतजोरुजोपाइये दौरिलागियेसाथ ॥ सपनेकोचि तचोरक्यों श्रावैश्रपनेहाथ ५७२ बामचोरटीकीकथा कहियेकाहिसुनाइ ॥ जागेहूनहिंमिलतहै सुपनेगई चोराइ ५७३ ॥ चित्रदर्शनउदाहरण ॥ चित्रहिचि तवतिचित्रत्यों रहीएकटकजोइ ॥ मित्रविलोकति रावरी कहोकौनगतिहोइ ५७४ निरखिनिरखिजि हिचित्रहरि राखतहौंहियलाइ ॥ तिहिदिखायकैनि जगरे डारेपायबनाइ ५७५ ॥ सौतुकदर्शनउदाहरण ॥ खिनपियमनखिनपियामन निरखिजातयोंभोइ ॥ ज्यों खिननदीजलसमुद्र नदिसमुद्रजलहोइ ५७६ ज्यों पियद्दगश्रलिभवततिय बदनकमलकीश्रोर ॥ त्योंपिय मुखशशिलखिभये तियकेनैनचकोर ५७७ ॥इतिशृंगार रसस्थाईश्रालम्बनसमाप्तम्॥श्रथशृंगाररसस्थाईउद्दीपनवर्णनं॥ श्रालम्बनमेंनायका नायकप्रथमबखान ॥ सखिदूतीश्र तुश्रादिश्रब उद्दीपनमेंश्रान ५७८ ॥सखीलक्षण ॥ रहै सदाजोसंगश्ररु करैकाजसमश्रानि ॥ हितश्रनहित कहुँनाकहै सोईसखीपहिंचानि ५७९ ॥ सखीचारिविधि कथनम् ॥ सखीचारिहितकारिनी विज्ञाविदगधल्याइ॥

अंतरंगिनीऔरपुनि बहिरंगिननसमाइ ५८० सखिल
क्षणमैंकैसहूबहिरंगिनिनसमाइ॥अन्तरंगिनीजोरतेग्रंथ
नबरणीजाइ ॥ ५८१ ॥ हितकारिणीसखीउदाहरण ॥ क्ष
णबनाइभूषणवसन लखतिदिठौनाल्याइ ॥क्षणवारत
धनशीशपै राईनोनबनाइ ५८२ चितचाहतअलिअंग
तुव लहिदीपकपरिमान ॥ लैलैजनमपतंगको सदा
वारियैप्रान ५८३ ॥ विज्ञानविदग्धयथा ॥ गूँजलैनतूआ
जुकत कुंजगईयहिकाल ॥ कंटकछतनखचाहिकै चष
नचाहिकैबाल ५८४ लालरंगफीकोपर्‌यो लीन्होमनो
निचोइ ॥ मिलैजोवारीसुमनयह तौवरनीकोहोइ ५८५॥
अंतरंगिनीउदाहरण ॥ मनमोहनल्यावतिनहीं सोहनल्या
वतिधाइ ॥ कारेयाहिडस्योनहीं कारेडस्योबनाइ ५८६
सबैआपनेअर्थकी बिथानजानतकोइ ॥ प्यारीउरमेंपी
रहै यतनकछूनहिंहोइ ५८७ ॥ बहिरंगिनीउदाहरण ॥
पियदेखतहीकामते गह्योकम्पतियआइ ॥ शीतजानि
अलिअग्निको ल्याईबेगजराइ ५८८ ॥ सखीकोकाम
कथनं ॥ मण्डनाशिक्षादेनिअरु उपालम्भपरिहास ॥
सखीकाजयेचारिविधि बरणतबुद्धिनिवास ५८९ ॥
मंडनयथा ॥ सखीसवांरीभाँवतीनिजनिजकारजजानि॥
मालिनिलैपुहुपाभवन भईसामुहेआनि ५९० सखिन
बनीहैकठिनतब भूषणकनकबनाइ ॥ बारबारहेरततऊ
दृगनलख्योनाहिंजाइ ५९१ ॥ शिक्षाउदाहरण ॥ अपने
घरबैठीरहो बाहिरदेउनपाइ ॥ डरियतहैचितवनिहरी
हरीनतबमातिजाइ ५९२ जिहिदृगमेंदृगलगिभरी

अग्निहियेमेंआइ ॥ तिहितनपानिपमाहिंअब लीजैबेग
बुझाइ ५९३ ॥ उपालंभयथा ॥ मोहिंनहींयहरावरी नो
खीबानिसुहाइ ॥ बांधिरहीरिसिमिरिचसों शीलकपूर
उड़ाइ ५९४ जिन्हेंआपनोजानतू ज्यायोअमृतप्या
इ ॥ तिन्हैंमारियतबावरी बिषकेबाणचलाइ ५९५ ॥
परिहाससखीकोनायकसों ॥ नेवरपियछतलगनको सुख
लीजोभरिपूरि ॥ अबहींदिनछुद्रावली बोलनकेअतिदू
रि ५९६ लगेनखनलखिकैकह्यो करचलाइकुचहाल॥
नखकेसरलागतदई चषकेसरयहबाल ५९७ ॥ परि
हाससखीकोनायकप्रति ॥ एकसखीइकछोहरे राधेरूपबना
इ ॥ रीतीमटकीशीशदै हँसीश्यामबहँकाइ ५९८ तियन
मुकुटपटछीनिकै होरीऔसरजानि ॥ सबशृंगारलरीनके
करेश्यामतनआनि ५९९ ॥ नायककोपरिहासनायका
प्रति ॥ चित्रबिचित्रनिचित्रअतिलु दीन्होअधिकसुजान॥
चित्रऔरकोसुमतितिय कियोमित्रसोंमान ६००सौंधो
लावतकंचुकी निजपियाचितयोबाल ॥ निरखतभाजे
सकुचते डारिकंचुकीहाल ६०१ ॥ नायकाकोपरिहास
नायकसों ॥ मुरलीआपुलुकाइकै पूछतहैंब्रजनाथ ॥ क
हतिहमारोहारहू धर्योहुतोतिहिसाथ ६०२ लाइबिरी
मुखलालतें खैंचलईजबबाल ॥ लालरहेसकुचायतब
हँसींसबैदैताल ६०३ ॥ दूतीवर्णनम् ॥ मिलिनसकतजो
तियपुरुषतिनमेंहितउपजोइ॥ छलबलआइमिलावईदू
तीकहियेसोइ ६०४ परियेआवैऔरकेदूतीकहियेसोइ॥
अपनीपठईहोइजो बानदूतिकासोइ ६०५ ॥ दूतीत्रिविध

भेदकथनम् ॥ अनसिखईसिखईमिलै सिखईकहैबखान ॥
उत्तममध्यमअधमयह तीनभांतिकीजान ६०६॥ उत्तम
दूतीयथा ॥ जिहिमानिकसोंमनदियो आइतिहारेहाथ॥
तिहियहअपनेरूपहू चलिदरशैयेनाथ ६०७ शिरक
लंककतलेतिमुख शशिनिकलंकीपाइ ॥ वहचकोरलै
दिनभरत बिरहअंगारनखाइ ६०८॥ मध्यमदूतीयथा ॥
वेगिआइसुधिलेहुयह अलीकह्योघनश्याम ॥ हौंदेख्यों
बहचातकी रटतितिहारोनाम ६०९ ॥ अधमदूतीयथा ॥
मोरकह्योकहियेउतै बनमालीकोपाइ ॥ नवलबेलिसी
बेलिमा दिनप्रतिसूखीजाइ ६१० ॥ नायकबचनबानदूती
प्रति ॥ यमुनातटठाढ़ीहुती पहिरिनीलपटआइ ॥ वह
घूँघटवारीमिलो जोजियकीरटलाइ ६११ मोहिंकहत
घनश्यामजो सुनिलीजैयहबैन ॥ बिनुलोपेउरदामिनी
किहिविधिराखौंचैन ६१२ ॥ बानदूतीबचननायकप्रति ॥
कौनमानसीजिहिलिये एतोकरतउपाइ ॥ तिलमेंजाइ
तिलोत्तमा नभतेमिलऊंल्याइ ६१३ ॥ बानदूतीभेदत्रि
विध ॥ हितकीअरुहितअहितकी अरुअहितोंकीबात॥
वहैसोहिताहिताहित अरुअहिताबिख्यात ६१४ ॥
हिताबानदूतीयथा ॥ कीजैसुखघनश्यामहौं आजपवनके
रंग ॥ वहियपलैचमकायहौं आजुतिहारेअंग ६१५॥
हिताअहिताबानदूतीयथा ॥समयपाइहौंदेउँगी प्यारीतुम्हैं
मिलाइ ॥ बिनुघनकैसेबीजुरी कहौदिखाईजाइ ६१६॥
आतुरहौगुणलालअब यत्नकीजियोओरि ॥बिनुफांदे
मगमिलतनाहिं जोउरकीजैदौरि ६१७ ॥ अहिताबान

दूती ॥ लगतिबाततांकीकहा जाकोसलमलगात ॥नेक सासकेलगतही पासनहींठहिरात ६१८ श्याममधुप लौंजिनिफिरो वहचंपकलीसीनारि ॥ रसनाहिंदेहैवैसहू मुखकीप्रीतिनिहारि ६१९ ॥ दूतीकेकाजकथनं ॥ अस्तु तिअरुनिंदाबिनय बिरहनिवेदननाइ ॥ अरुपरबोध मिलायबो दूतीजानसुभाइ ६२० ॥ नायकाकीस्तुति ॥ निजतनजलशायीकहति करिसमुद्रआगार ॥ तिनको मनपावतनहीं तुवतनपानिपपार ६२१ दिपतिदेहछ बिगेहकी केहिबिधिबरणीजाइ ॥ जिहिलखिचपलाग गनते क्षितिपरफरकतिआइ ६२२ कसाकिकसाकिपूछ तिकहा चसकिमसकिअनुमान ॥ खसकिजायगीटसकि यह नेकससकिसुनिकान ६२३ ॥ नायककीस्तुति ॥ ति नकेरूपअनूपकी किहिबिधिकहियेबात ॥ जिनमोहन छबिमनधरे मनमोह्योसोजाल ६२४ ॥ नायकाकीनिंदा ॥ कहाआपनेरूपकीफूलिकैरहीहाल ॥ तोहूँतेअतिआग री नगरनागरीबाल ६२५ ॥ नायककीनिंदा ॥ शीश मुकुटकटिकाछनी फाटीसाटीहाथ ॥ मिलनचहतय हिरूपसों राधाजूकेसाथ ६२६ ॥ नायकासेबिनय ॥ कामिनिजिहिचितवतहुते पैदृगबाणचलाय ॥ तेहि ज्यावनकोयत्नअब कीजैमुरिमुसुकाइ ६२७ ॥ नायक सोंबिनय ॥ जाहिबचायोमेहते करिगिरिवरकीछाहिं ॥ ताहिश्यामजिनिजारियो बिरहानलभरिमाहिं ६२८ नायकाकोबिरहनिबेदन ॥ वाकेनैननिरावरी बसीलुनाई जाइ ॥ लोनखारअंशुवानते पायोभेदवनाइ ६२९

कहाकहोंवाकीदशा जबखगबोलतराति ॥ पीयसुनत
हीजियतिहै कहासुनतिमरिजाति ६३० ॥ नायकको
बिरहनिबेदन॥ जबतेंआईतड़ितलौं नीलाम्बरमेंकौंधि ॥
तबतेंहरिचकृतभये लगीचखनिचकचौंधि ६३१ परे
सूमअरुसरपकी एकैगतिदरशाइ ॥ धनिमनिबिछुरे
दुहुनको शीशधुनतनितजाइ ६३२ ॥ नायकाकोप्रबोध ॥
अबकीजैआनन्दयह बन्योव्यौंतअनयास ॥ तेरेमी
तरुकंन्तकदोऊअटारीपास ६३३ ॥ नायकाकोप्रबो
ध ॥ हरिचिन्तानाहिंकीजिये अपनेमनमेंल्याइ ॥ याहो
रीकेखेलमें गोरीमिलिहैआइ ६३४ ॥ दिपतिकोमिला
यबो ॥ रमणीरमणमिलाइयो दूतीरहतबराइ ॥ घनदा
मिनिकोजोरिकै ज्योंसमीररहिजाइ ६३५ ॥ इतिदूतीभे
द । अथनायकके सखा कथनं ॥ जोनायकसोंनायका नीके
मिलवैआनि ॥ नरगसचिवतिहिकोकहै सोईचारिविधि
जानि ६३६ ॥ तंत्रनामभेद ॥ पीठिमरादिबुधिबचनसों
मानहिंदेइमिटाय ॥ बिटजोजानतदूतपन कैसबकला
बनाय ६३७ चेटकहैवहजोकरै अवसरदेखिसुपास ॥
तौनविदूषकजोकरै दम्पतिसोंपरिहास ६३८ ॥ धीरम
रदयथा॥ हैकोईदेखतनहीं सकैजोयुवतिनआइ ॥ पिय
प्यारीतूकौनकी राखतिहैहरवाइ ६३९ कहाभयोहोंकह
तहौं कततूरहीरिसाइ ॥ तेरेकोपकरेकहो कोपकरेनहिं
पाइ ६४० ॥ बिटकोयथा ॥ श्वेतवसनतेजान्हिमें लखि
नपरततवगात ॥ योंकहिबोल्योकामिनी आजुमिलन
कीघात ६४१ सखिनबीचजिनदीजिये मिलियेपियसंग

आइ॥ बामबामतानहिंतजै अरीपरेहूपाइ ६४२॥ चेटकको यथा॥ पियातियसखियनमेंलई जबैकामकीसेन॥ चलोबोलिहौंजातहौं देखनअपनीधेन ६४३ पियमधुकरतियनलिनकों लख्योआनिजबदाइ॥ दुहूंमिलायसखाचल्यो सांझसमयलैआइ ५४४॥ विदूषकयथा॥ रमणीरमणमिलापजब भयोकुंजकीओर॥ जाइआपहीदूरितें बोल्योज्योंतमचोर ६४५ तबराधाकोल्याइकै हरिसोंदियोमिलाइ॥ तबधरियशुमतिरूपको हेरनलाग्योगाइ ६४६॥ अथ उद्दीपनमेंषड्ऋतुमध्ये वसंतऋतुवर्णनं॥ कहलावताबिगसनकुसुम कहूँडोलावतवाइ॥ कहूँबिछावतिचांदनीमधुऋतुदासीआइ ६४७ यहमधुऋतुमेंकौनकेबढ़तनमोदअनंत॥कोकिलगावतहैंकुहुकि मधुपगुंजरततंत ६४८ औषधीशसंगपाइअरु लहिवसंतअभिराम॥ मनोरोगजगहरनको भयोधनंतरिकाम ६४९ फूलेकुंजनअलिभ्रमत शीतलचलतसमीर॥ भानजातकाकोनमन जातभानुजातीर ६५० सरवरमाहिंअन्हाइअरु बागबागबिरमाइ॥ मंदमंदआवत पवनराजहंसकेभाइ६५१कलपवृक्षतेसरसतू बागद्रुमनकोजान॥ सागरनिकसोसलिलकहँ जलजंतुनमिसिआन ६५२ ग्रीष्मऋतुवर्णनं॥ धूपचटककरिचेटकरि फाँसीपवनचलाइ॥ मारतदुपहरबीचमें यहग्रीषमठिगआइ ६५३ छूटतयेनलिनालजल सजिसजिक्षितितेआइ॥ देखिनिदाघअनीतिको चल्योभानुपैजाइ ६५४ कोऊउभरतउछरतकोउजलछिरकतआइ॥ लखिनारिनजलकेलि

छबिपियछकिरह्योबनाइ ६५५ पियछीटतयोंतियन क-
रलहिजलकेलिअनंद ॥मनोकमलचहुंओरते मुकतिन
छोरतचंद ६५६॥ पावसऋतुवर्णनं ॥ पावसमेंसुरलोक
ते जगतअधिकसुखजानि॥इंद्रबधूजिहिऋतुसदाक्षि-
ति बिहरातिहैंआनि ६५७ सुमनसुगंधनसों सनेमंदमंद
चलिआइ॥ प्रौढ़ालोंमनकोहरति हियलगिबरषावाइ
६५८ अरुणचीरतनमेंसजे योंबिहरतिहैंनारि॥ मानो
आईहैंसुरी वसुधाहरीनिहारि ६५९ भूलिभूलितिय
सिखतिहैं रागचढ़नकीरीति ॥ आजुकाल्हिमेंआइहैं
सुरनारिनकोजीति ६६० ॥ शरदऋतुवर्णनम् ॥ चंद्रछत्र
धरिशीशमें लहिअनंगउपदेश॥ कमलअंत्रगहि जीति
जग लीन्होशरदनरेश ६६१ चन्द्रबदनचमकाइअरु
खंजननैनचलाइ॥सकलधराकोछरतयहशरदअप्सरा
आइ ६६२ दिनसोहतजलअमलहै निरमलकमल
अनूप ॥ निशिजोहतहीबादबदि हियमोहतशशिरूप
६६३ ॥ हेमंतऋतुवर्णनं ॥ दिननिशरविशशिलहतहैं हे
मशीतकेयोग ॥ भरमचकोरनभोगहैं कोकनभरमबि-
योग ६६४ हेमशीतकेडरनते सकतनऊपरिजाइ॥ रह्यो
अग्निकोपाइकै धूमभूमिमेंछाइ६६५॥ शिशिरऋतुवर्णनं॥
प्रकटकहतयाशीतमें चूखरूखकोपात॥ बिछुरनकोशीत
हुधरेसुखतजातहैगात ६६६ माननकाहूकोरहत ल्याइ
दूतिकाघात ॥ सिलेदेतयाशिशिरकी सीसीसीकीबात
६६७ ॥ अन्यच्चउद्दीपन ॥ निकसतषटऋतुमेंबहुत उद्दी
पनयहपाइ ॥ यातेफिरिबरण्योनहीं इन्हेंभिन्नकरि

ल्याइ ६६८ धोमसेजरागादिमिलि यहउद्दीपनजान ॥
इहांकछूसंक्षेपते बरणनकीनोआन ६६९ ॥ अंगजसंभोग
उद्दीपन॥आलम्बनचुम्बनपरसमर्दननखरदजान॥येअं
गजसंभोगमेंउद्दीपनपरिमान १७०॥ इतिशृंगाररसस्थाईर
तिविभावसमाप्तः ॥ अथअनुभावकथ्यते ॥ कहिविभावकोक
हतहौं अबअनुभावप्रकास ॥ जोहियतेरतिभावअनु
प्रकटकरैअभ्यास ६७१ कटाक्षादिसोंचारिविधि अप
नेमनपहिंचानि ॥ तिनकोकवियहिभांतिसों बरणतहैं
जियजानि ६७२ काइकएकसोजानियेमानसदूजोहोइ ॥
आहारजहैतीसरो चौथोसात्विकजोइ ६७३ करकीग
तिआदिकसोई काइकमानविशेषि ॥ मनकोमोदप्रकट
किये सोमानसअवरेषि ६७४ नृत्यसमाजबनावते
कृष्णगोपिकाज्ञान ॥ सोआहारजजानिये बुधजनकरत
बखान ६७५ बहुरोसात्विकहैसोई खेदादिकठहरात ॥
इनभावनकेभेदये चारिजानिअवदात ६७६ तनबिभ
चारिनविछतिहै येसबसात्विकभाव ॥ वाईपरगटकरन
हितगनेजातअनुभाव ६७७ नारीऔनरकरतहैंजोअन
भावउदोत ॥ तेवैदूजेऔरकोनितउद्दीपनहोत ६७८
अनुभावयथा ॥ श्यामसैनतियनैनतकि निसरिभीरते
आइ ॥ अधरआंगुरीधरिचली चितकीचाहचिता
इ ६७९ मोमनभूल्योहैकहूं कोउनदेतबताइ ॥ मृगनै
नीदगलखिहँसति इनहींपरिठहराइ ६८० दृगनजोरि
मुसुकाइअरु भौंहेंद्रोउनचाइ ॥ ओठनिआंठिबनाइयह
प्राणउमेठतजाइ ६८१ चितवतघायलकरिदियो

हायलकियोबनाइ ॥ फिरिहँसिमायलकीललो चली तरायलभाइ ६८२॥हावलक्षण ॥हावअनुभावबिवेकवर्णनं॥ समसंयोगशृँगारकी इहांकहीयतहाव ॥ अनुभवजानि बिशेषिअरु येसामान्यसुभाव६८३ जहांबचनक्रमचेष्टा बरणतहैंकबिलोइ॥ सोअनुभावरुहावहै तहांभेदयेजो इ ६८४ जोरतिभावप्रकटकरै सोअनुभावबखान ॥ रतिबढ़िवहैशृँगारपुनि हावहोतहैआन ६८५ बहुतहा वकछुहेतलहि होतनरनमेंआइ ॥ बरणेसहजसुभावल खि नारिनहींमेंल्याइ ६८६॥ लीलादिकहावदशबर्णनं॥ स्वभावकेलक्षणं ॥ सोलीलापियदेखितिय निजतनरा चैल्याइ ॥ वहबिलासपियलखिकरै तियमनहरण सुभाइ ६८७ चितवनादिक्रियआभरण फबनिल लितहैसोइ ॥ रिसतेनिदरैभूषणनि छविबिक्षिप्तहै सोइ ६८८ कपटनिरादरगरबते यहैबिवेकबिचारि ॥ पूरणहोवेचाहजिहि पियसंगबिहितनिहारि ५८९ मो टायितप्रकटैजोतिय ऐंठनादितिचाउ ॥ कलहकलैजो कलमैं सोईकुटमितहाउ ६९० किलकिंचितरोदनहँ सन रिसभयआदिगिनाइ ॥ सोबिभ्रमउलटोतिया क रैजोकाजबनाइ ६९१॥ लीलाहावयथा॥ आजुराधिका आपको हरिकोरूपबनाइ॥ ब्रजबनितनिकोलैगई ब्रज बनितनबहँकाइ ६९२ श्यामभेषबनिकैगई राधेकुंजन धाम॥भूल्योभेषचकितभई जितदेखेतितश्याम ६९३॥ बिलासहावयथा ॥ दृगनजोरिअलसाइअरु भौंहनकोवि लसाइ॥कामिनिपियहियगोदमेंमोदभरतसीजाइ६९४

भौंहभ्रमाइनचाइदृग अरुअधरनमुसुकाइ ॥ पियहि अनन्दबढ़ाइतिय चलीमन्दगरवाइ ६९५ ॥ ललित हावयथा ॥ रसनीतूअँखियनचितैं अरुअधरनमुसुकाइ ॥ मदअनमददोऊदये निजप्रीतमकोप्याइ ६९६ ज्योंपद भूषणकेसजे अंगअंगछबिहोति ॥ त्योंभूषणतेकैरही पटभूषणकीजोति ६९७ ॥ बिक्षितहावयथा ॥ बिनास जेभूषणनके कहाहोतहैनारि ॥ बिधिकेसजेशृँगारसो तू नहिंसकतिउतारि ६९८ श्यामलालइनतिलकतुव यह रंगकीन्होबाल ॥ सौतिनकोरंगश्यामदै रंग्योश्यामको लाल ६९९ चाहनहींभूषणनकी तुवअंगनिसुकुमार॥ हियोभुलावनहारहै तौहियभूलनहार ७०० ॥ बिब्बो कहावयथा ॥ बातहोइसोदूरिते दीजैमोहिंसुनाइ ॥ का रेहाथनजिनगहो लालचूनरीआइ ७०१ ज्योंज्योंछकि छकिनेहते पगनपरतहैलाल ॥ त्योंत्योंरूखीयेपरतिकौ तुकछकेरसाल ७०२ ॥ विहितहावयथा ॥लखिनसकति तियनैनभरि धरीसखिनकीआनि ॥ पीपरभावरतनभरै पीपरिभावरिप्रानि ७०३ बातकहतहरिसोंभई यहतिय कीगतिआज ॥ ज्योंज्योंखोल्योमदनमुख त्योंत्योंमूंध्यो लाज ७०४ ॥ मोटायितहावयथा ॥ श्यामविलोकतकामते भ्योयहबामसुभाइ ॥ करनखुजाइउठाइकर अंगिरानीज मुहाइ ७०५ ॥ द्वितीयमतेविहितहाववामोटायितहावभेदलक्ष णम् ॥प्रकटभयेचितचावतिय पियसोंकरैदुराव॥ ताहिबि हितकोऊकहैकोऊमोटायितहाव ७०६॥विहितहाव मोटा यितहाव यथा ॥ श्यामाविलोकतकामते भयोकम्पजोवा

म ॥ शीतनामलैलाजते बैठिगईतितबाम ७०७॥ कुट्ट
मितहाव यथा ॥ खिनकुचमसकतिखिनतजाति खिनमुख
लखतिबिशेखि॥छकतिभयोपियतियहँसति उचकतिसि
सकतिदोखि ७०८ किहिबिधितिहिउरलाइयत जाकीप
करतिबांह॥ एकसीकरनमेंछयोअंगसीकरनमांह७०९॥
किलकिंचितहाव यथा ॥ शिवशशिकेशिरमेंशिवा तकि
निजछांहभ्रमाइ ॥ डरिछकिरोईबहुरिहँसि हँसीआपको
पाइ७१०॥ बिभ्रमहाव यथा॥ बैठीअरुणकपोलदै लाइ
दिठौनाभाल ॥ इहिविधिकिहिमनहरणयहचलीनचली
बाल ७११॥ पुनः बोधकादिदशहावस्वभावकलक्षण॥ सैनबु
झावैकरिक्रियाबोधककहियेसोइ ॥ मौंगधसोइपहिंचा
निये तियाअयानीहोइ ७१२ हँसतसरसरसउमगते
पियढिगतियमुसकान॥ रूपतरुणतागासते गरबसोई
मदजान ७१३ कौनहुहितसन्तापतिय होइतपनहैसो
इ॥ सोबिछेपमगनेभये हानिगानकीहोइ ७१४ चकि
तसुऔचिकचौंकिबो कछुअचरजकोदेखि ॥ पियहिरि
झावैकेलिरचिसोईकेलिअवरेखि ७१५ कौतुकरचिबन
उठिचलै कौतूहलसोंगाइ ॥ बातनकोबिस्तारजहँ उ
द्दीपनकहिताइ ७१६॥ बोधकहावयथा ॥ मांगबीचधरि
आंगुरी ढांपिनीलपटभाल ॥ अर्द्धनिशासीछपतहीसैन
बताईबाल ७१७ पियकीचाहसखीकही फूलसुदरशन
लाइ॥ उत्तरदीन्होनागरी जीतीफूलदिखाइ७१८॥ मौं
गधहावयथा ॥ अधिकअयानीबनचली खेलिखेलिपिय
साथ॥कौनलतासोमुकतिमानि लागतहैकहुंनाथ७१९॥

हसितहावयथा ॥ सखिनडरीमुखमोरिकै निजसुहागसु खपाइ ॥ बारबारअंगरानिसो भागभरीमुसकाइ ७२०॥ मदहावयथा ॥ रूपगरबयौबनगरब औरमदनकेजोरि ॥ बालदृगानिमेंमदभरी आवतचलीहिलोरि ७२१ ॥ तपन हावयथा ॥ जेसुहागभूषणसजे तियपियसुनतपयान ॥ तेजरिकंचनक्वैगिरे उपजतबिरहकृशान ७२२ गईयाम युगयामिनी श्यामनआयेधाम ॥ ठामठामतबबामकै जा रनलाग्योकाम ७२३ ॥ विक्षेपहाव उदाहरण ॥ सिगरीचि तवनिहैखरीनगरीतेंनडराति ॥ गगरीभरिबोछांड़िकै तू कतडगरीजाति ७२४ ॥ चकितहावउदाहरण ॥ घनगरजत चकचौंधियों डरीनारिगहिनाह ॥ जिमिदामिनिअति कौंधिकै दुरैश्यामघनमाह ७२५ ॥ केलिहावउदाहरणं ॥ फगुवामिसितियछीनिपट अचरजकियोबनाइ ॥ नटनि दैनिचलिफिरनिमें दीन्हेश्यामनचाइ ७२६ ॥ कौतूहल हावउदाहरणं ॥ अंगशिंगारतकान्ह सुनि योंदौरीवहबाल॥ कहुँबिंदुलीकहुँउरबसी कहूँगिरोवनमाल ७२७ ॥ उद्दीपनहावउदाहरण ॥ हहाश्यामबेनीतजो बेनीतजियत बाम॥ कौनअकामहिकरतहौ प्यारीयहतौकाम ७२८॥ तीनहावमनोभववर्णनं ॥ हावभावहेलातिहूँ मनतेउपजेजा न ॥ दुरेप्रकटअतिरिसभरे तीनोंलीजैमान ७२९ ॥ भावलक्षण ॥ मनकीलगनजोपहिलहीसोकहियतहैभाव॥ चतुरसहेलीजानिइति येकैदेखिसुभाव ७३० ॥ भाव यथा ॥ मनऔरेसेक्वैगयो रहीनतनमेंछाज ॥ मोहीयो लागतकहूँ मोहीहैतूआज ७३१ मोईहैअँसुवानतेरही

अरुणताछाइ॥ काहूइनतुवदृगनिमेंनेहदयोहैनाइ७३२॥ हावलक्षण ॥ दृगअंचलहेरेंहँसै बोलैमीठेबैन ॥ प्रेमचातुरीजरवयुत हावकहतहेंपेन ७३३ ॥ हावयथा ॥ चलतसांकरीखोरिमें हरितनपरसतबाल ॥ बदनमोरिकछुबोलिकै हँसीलोलतकिलाल ७३४ तौवसंतकोऊ नहीं अनितखेलतहैबाल ॥ मुखगुलाबकुचअरगजाजो गहिलावोलाल ७३५ ॥ हेलाहावउदाहरण ॥ चितवनिबाणचलाइअरु हासकृपाणलगाइ ॥ उरजगुरजपियहियहनै भुजफाँसीगरलाइ ७३६ ॥ सातहावपेजनयेवर्णनं॥ स्वाभाविककाहिबीसअरु कहेमनोभवलीन ॥ बातऐजनजजानिकै अबवर्णतरसलीन ७३७ ॥ रूपप्रकाशतेचतुर्विधिस्वाभाविकलक्षण ॥ रूपराशिसीभुवनिकोँ शोभयवरणैजान ॥ अंगभलकिअरुविमलता सोईकांतिप्रमान ७३८ कांतिहिकोविस्तारसो दीपतिचितमैंल्याउ ॥ अतुलरूपकीमधुरता सोमाधुरजगनाउ ७३९ ॥ शोभाउदाहरण ॥ जितदेखततुवअंकदृग तितसुखलहतअपार ॥ मानोलीन्होंरूपही नखशिखतेअवतार ७४० एकसखीकरलैछरी हरतिचकोरनधाय ॥ एकभौंरकीभीरसोंमारतचौरढुराय ७४१ ॥ कांतिउदाहरण ॥ मुकुरविमलताल हिगहे कमलमधुरताबास ॥ तौतुवतनकेमिलनकी सुवरणराखैआस ७४२ अमलहियेधनकीपरी लालआइयहछांह ॥ जानिआपनीउरवसी कतभरमतमनमांह ७४३ ॥ दीपतियथा ॥ चंदछानिविधिमुखरचे तनचपलासोंठानि ॥ तापरिउपधारैखरी तौतुवपूजै

आनि ७४४ ॥ मानरजयथा ॥ कुमतिचंद्रप्रतिद्यौस
बढ़ि मासमासकढ़िआइ ॥ तुवमुखमधुराई लखैपीको
परिघटिजाइ ७४५ बिनुशिंगारतूमधुरई प्राणदेतघटि
आनि॥मानोबिधियहतनरच्योशुद्धसुधासोंसानि७४६॥
द्वितीयमतेशोभाकांतिदीपतिकोलक्षण ॥ यौबनतेजोउप-
जई शोभाताहिबिचार ॥ जोकछुउपजैमदनते सोई
कांतिनिरधार ७४७ कांतिहिकेबिस्तारको दीपातिजिय
मेंजानि ॥ तिनिहूँकेअबकहतहौं उदाहरणकोआनि
७४८ ॥ कांतिउदाहरण ॥ ज्योंज्योंमनमथआइउर मन
दधिमथतबनाइ ॥ त्योंत्योंमदघृतबिदितह्वै ठौरठौरउत
राइ ७४९ ॥ दीपतिउदाहरण ॥ हावभावप्रतिअंग
लखि छबिकीझलकनिशंक ॥ भूलतज्ञानतरंग सब
करमनझालकुरंग ७५० ॥ प्रगल्भताधीरताबिनयकोलक्षण ॥
प्रगल्भतायौबनगरब चलैहँसैनिरशंक ॥ पतिव्रताअरु
प्रेमदढ़सो धीरतकोअंक ७५१ बिनयनवनजोशील
युतरिसमेंरसअधिकाइ ॥ अबवरणतहौं तिहुँनकेउदा
हरणकोल्याइ ७५२ ॥ प्रगल्भतायथा ॥ केसरआड़ालि
लारदै बिनाआड़चलिआइ॥टाड़टौनसोमारियह चाड़
भरीमुसुकाइ ७५३ निकसितियनकेजालसों मुख
तेघूँघटटारि ॥ अरीहरीमतइनहरी फूलभरीसोंमारि
७५४ ॥ धीरतायथा ॥ कितेसप्तऋषिलौंफिरत चहुँदिशि
धरिधरिप्रेम ॥ तऊनध्रुवलौंतजतियहथिरताईकोनेम
७५५ हनिहनिमारतमदनशर वैरतियनसोंठानि ॥ तऊ
सुभटलौंमनडरहिं पकरिखेतकुलकानि ७५६ कतमारत

मुहिंआानिनित रेमनमथमतिहीन॥ मनतोमेंपियबदन तजिमख्योनंहैलीन ७५७ दीपतिहारेनेहको बरणत रहिहियमाहिं ॥ बातचहूँदिशिकीसहै बूझतकैसेहुनाहिं ७५८ ॥ बिनययथा ॥ बालयहैजगमाहिं जियबालनग होसुभाइ ॥ शीशचढ़ायेहूसदा नैनैपरसतपाइ ७५६ पियअपराधजनाइ सखिकितोसिखावतमान ॥ शील भरोतियदृगतऊतजतनअपनीबान७६०॥औदारजलक्षण॥ इकबरणतहौंविनयतजि औदारजकोआनि ॥ ताहू कोलक्षणसुनो अबहौंकहतबखानि ७६१ महाप्रेम रसबसपरे औदारजकहिताहि ॥ जीवनतनधनला जकी जहांनहींपरवाहि ७६२ ॥ औदारजयथा ॥ यह मतिराधेकीभई सुनिमुरलीकीतान ॥ तनकहँधनकहँला जकहँ दैनचहोतबप्रान ७६३ दईजुतुमबनमालसोहिये लाइवहिबाल७६४॥ हावगनन ॥स्वाभाविकजेबीसअरु मनोभवत्रयअभिराम ॥ लहतसातस्वाभावमिलि अलं कारयहिनाम ७६५ अलंकारनारीनकेदीनेतीसगनाइ॥ लैकेग्रन्थनकोमतो तेराखहुचितलाइ७६६॥ इतिभावहा वसमाप्तम्॥ अथअनुभावमधिव्यभिचारीवर्णनम् ॥ कहिअनु भावनहावहू बरणेतिहिसँगआनि ॥ अबव्यभिचारिन कोकहों सोद्वैविधिपहिंचानि ७६७ तिनद्वैभेदनमाहिंजे तनव्यभिचारीआहि ॥ लहिअनुभावप्रसंगको पहिले बरणोताहि ७६८ तिनहींव्यभिचारीनको सात्विकक हियेनाम ॥ कहिलक्षणतिनकेकहों उदाहरणअभिराम ७६९ ॥ अथतनव्यभिचारीसात्विकलक्षणं ॥ सुखदुखआ

दिजुभावना ह्वैमाहिंकछुहोइ ॥ सोबिनबस्तुनप्रगटैसा
त्विककहियेसोइ ७७० सन्तशबदप्राणीकह्यो जीवतदे
हनिहारि ॥ ताकोंजोकछुधरमहै सोसात्विकनिरधारि
७७१ येप्रगटतथिरभावको अरुयेहैतनभाइ ॥ यातेंक
बिइनकोगनै अनुभावनमेंल्याइ ७७२ भेदशिंगारनभा
वअरुसात्विकमेंयहजानि ॥ वैप्रगटतरतिभावये सबथा
इनकोआनि ७७३ दूजोयहअनुभावअरु सात्विकभेद
उदोत ॥ वैबिनुबशतेहोतहैं येनिजुबशतेहोत ७७४ सोई
सात्विकआठहैं यहजानतसबकोइ ॥ तिनकोबरणनकर
तहौं सबग्रन्थनिमतजोइ ७७५ सातोसात्विकनामते
लक्षणप्रकटलखाइ ॥ आठौंलक्षणप्रलपको अबदेहौं
समुझाइ ७७६ ॥ स्वेदयथा ॥ घनआवतजेआदिही च
लतस्वेदतनआइ ॥ योंआवतयहकान्हके श्रमजलरही
अन्हाइ ७७७ बामलखततनश्यामको कह्योस्वेदयों
आइ ज्योंतरपतिहीबीजुरी वरषतमेघबनाइ ७७८ ॥ अ
स्तंभयथा ॥ हरिकेदेखतहीकहा थकितभयोतुवगात ॥
रहीरईलैहाथमें दहीमथ्योनहिंजात ७७९ पागसजत
हरिदृगपरी जूरेबाँधतबाम ॥ रहेपेचकरमैंपरे औैर
पेचमेंश्याम ७८० ॥ रोमांचयथा ॥ हौंतोहीपरआ
नियह लखीअपूरबबात ॥ जितमारतपियफूलति
तहोतकटीलोगात ७८१ कानभयोरीमानयह जिन
अपनेमनचेत ॥ रोमरोमतेतनउठ्यो तवआदरकेहेत
७८२ ॥ सुरभंगउदाहरण ॥ छकितकह्योमोप्राणतुवनहिं
नाहिंहियठहिराय ॥ मानोनिकसतहैसुरा सीसीमुखते

आइ ७८३ अबहींतुमगावतहुतेभईकौनपरबात ॥ सुर-
तरंगकेल्लेतकत सुरतभंगकैजात ७८४ ॥ कम्पयथा ॥
लख्योनकहुँघनश्यामअरु बोलसुन्योनहिंकान ॥ कहां
लगीतूबेलसी बातचलतथहिरान ७८५ तनधनचंदन
बदनशशि द्युतिशीतलतापाइ ॥ आजुअंगब्रजराजके
कम्पभयोहैआइ ७८६ ॥ विवरणयथा ॥ कारोपीरोपट
धरे बिहरतधनमनमाहिं ॥ यातेनिर्मलखघातमें कारीपीरी
छाहिं ७८७ पद्मनिलखिरसलैानिहित अतिअनंगसर
साइ ॥ मधुपरीतिहरिबदनपै भईपीतताआइ ७८८ ॥
आंशूयथा ॥ पियलखिनहिंतियचखनमें सुखअँशुबाठहि
राइ ॥ आपनयेशीतलहियो शीतलकरतबनाइ ७८९
परतबालमुखछाहिंके दृगनरूपमेंआइ ॥ हरिकेसुखअँ
शुवा चलेंपारदलौंउफनाइ ७९० ॥ प्रलापकोलक्षण ॥
होतहरषदुखआदिते नष्टचेष्टाज्ञान ॥ सुधिनहिताहित
कीरहै सोइप्रलापपहिंचान ७९१ ॥ यथा ॥ तबतेसु
धिनशरीरकी परीबालबेहाल ॥ जबतेआयेहैंलपटि
कारे लौंडासिलाल ७९२ डरतनहींकछुअग्नितेजलते
नहिंसियराति ॥ राधेदेखतहीभई यहमतिहरिकेसाति
७९३ ॥ आठौंसात्विककेदोहामेंउदाहरण ॥ पियतकिछकि
अधबरण कहिपुलकस्वेदतेछाइ ॥ कैबिबरणकंपतिगिरै
तियअँशुबाठहिराइ ७९४ ॥ इतितनव्यभिचारीसमाप्तम्॥
अथतेंतीसमनव्यभिचारीकथनं ॥ बरणेतनचरभाइअब ब
रणोंमनचरभाइ ॥ जेथायिनकेहोतहैं नितसहकारी
आइ ७९५ रहतसदाथिरभावमें प्रकटहोतयहरूप ॥

जैसेआनिसमुद्रते निकसतलहरअनूप ७६६ फिरत
रहतसबरसनमें इनकोयहैस्वभाव ॥ जारसमेंनीकोजु
है तैसोतहांबनाव ७६७ पहिलेदैनिर्वेदको थायीमाहिं
गनाइ ॥ पुनिअबरास्योआनियह ब्यभिचारिनमेंल्याइ
७६८ तत्त्वज्ञानबिरहादिते जहँजगकोअपमान ॥ और
निदरबोआपनो सोनिर्वेदप्रमान ७६९ निजरस
पूरण होनलौं थायीजानिउदोत ॥ गयेरौद्ररसमेंवहै
ब्याभिचारीपुनिहोत ८०० त्योंहींचिंताआदिजेधरेदशा
दशमाहिं॥गयेऔरठौरनवहैब्याभिचारीकैजाहिं ८०१॥
निर्वेदलक्षण ॥ ध्यानशोचआधीनता आंशूश्वास
उश्वास ॥ उठिचलिबोसरबसतजी येअनुभावप्र
कास ८०२ ॥ निर्वेदयथा ॥ यहजियआवतहैअली
तजिसबजगतेआस ॥ बनमालीकेलखनको बनमें
लीजैबास ८०३ कतरोवतस्वाहिंआइकै कछुबिवेकहै
तोहिं ॥ श्यामरूपआगेकहो कौनदेयहैमोहिं ८०४ ॥
गिलानलक्षण ॥ रतिगतादितेनिबलता नहिंसँभारसो
गिलान॥क्षीणबचनकम्पादिते जानलेतहैजान८०५॥
यथा ॥ नयेशङ्कयेगनतहै रतिहीमाहिंविलास ॥ कहूं
सुन्योकाहूलई मालीपुहुपसुबास ८०६ खीजतहूमींज
तकुचन रीझतमूठिबनाइ ॥ आलीबानरहाथमेंपस्यो
नारियरजाइ ८०७ ॥ दीनतालक्षण ॥ दुखदारिदबिर
हादिते होतदीनताआनि ॥ मनसोंबचहाहाकरत तन
मलीनताजानि ८०८ ॥ यथा ॥ हरिभोजनजबतेदये
तेरेहितबिसराइ ॥ दीनभयोदिनभरतहै तबतेहाहा

खाइ ८०९ तुवडरभजिवनवनफिरत अरिनारीबिल
खाइ॥जबपरपतिलागतहुते अबयेकंटकआइ ८१०॥
शंकालक्षण॥निजतेकछुअवगुणभये कैंचवावकछुदेखि॥
उपजैशङ्काजानियेइतउतलखनविशेखि ८११॥यथा॥
शङ्काहूहैजबलख्यो तुम्हैंवाहिमुसकात॥तबतेजाने
जगतमें होतमेरियेबात ८१२॥त्रासलक्षण॥त्रास
भावप्रकटैसदा घोरदरशसुधिपाइ॥स्तम्भकम्पधक
धकहुते तनमेंहोतजनाइ ८१३॥यथा॥हँसतिहँस
तितियकोपकै पियसोंचलीरिसाइ॥निरखिकिनारीत
रपको डरपिगईलपटाइ ८१४ देशदेशकेपुरुषसब च
लतरावरीबात॥योंकांपतिज्योंबाततेरूखरूखकेपात
८१५॥आवेगलक्षण॥अरिदर्शनउतपातलहि मित्र
शत्रुजहँहोइ॥सोअवेगखेलनतपन विभ्रमभ्रमतेहो
इ ८१६॥यथा॥परीहुतीपियपासतहिं गईसासुकहुँ
आइ॥सटपटाइसकुचाइतिय भाजीभवनडराइ ८१७
सुनितुवदलअरितियनकी ऐसीगतिदरशात॥भजतिगि
रतिगिरिफिरिभजति भजिभजिगिरिगिरिजात ८१८॥
गर्वलक्षण॥जोकाहूअधिकारते अहंकारमनहोइ॥पर
निदरेतेलखिपरे गर्वकहावैसोइ ८१९॥यथा॥प्रीत
मपठईबिंदुली सोलिलारचमकाइ॥सौतिनमेंबैठीति
याकछुऐंठीसीजाइ ८२०॥आँशुवालक्षण॥परगुणद्र
व्यविलोकिके होतआँशुवाआनि॥योगकथनउपवच
नते प्रकटलीजियेजानि ८२१॥यथा॥कमलाहरिके
उरबसे लह्योउर्वसीनाउँ॥यहगुणराधेउरबसी बैठीवाँधे

पाउँ ८२२॥ अमर्षलक्षण ॥ उपमानादिकते कछूकोपआव
सुअमर्ष॥कहियतबचनकठोरतहँबढ़ैतापघटहर्ष८२३॥
यथा ॥जोदासीकेबशभये जगकहायब्रजराज॥ तिनकीये
बतियांकरत तुम्हैंनआवतलाज ८२४ कहाकहोंमोप्रभु
नहीं दीनोशासनमोहिं ॥ नातररेराकसकछूहौंदिखावतो
तोहिं८२५॥ उग्रतालक्षण॥अपराधिकतेजोहियोजोनिरद
यताहोइ॥सोईउग्रताजानियोतरजनताड़नहोइ ८२६ ॥
यथा ॥ शीशफूलजेहिलालको सौतिनकरेबनाइ ॥ तेहि
राखौंगीआजुहौंपायलमाहिंलगाइ८२७ ॥ उत्सुकतालक्ष
ण ॥ सहिनसकैजोकालगति उत्सुकतातिहिजान॥ उपजे
औधिबिभावसो बिकलाईतेमान ८२८ ॥ यथा ॥ पति
यापठवनकहिगये सोनाहिंपठईलाल ॥ ताहीकीअव
सेरमें बिकलभईहैबाल ८२९ दिनअवसेरतहीगयो
नहिंआयेब्रजराज ॥ सजनीअबजियजातहै यारजनी
केसाज ८३० ॥ स्मृतिलक्षण ॥ लखैबसनमणिगणचितै
फिरिवाकीसुधिहोइ ॥ कैसुधिपूरबअर्थकी अस्मृतिक
हियेसोइ ८३१ हरषसहितअवलोकिबो भौंहनको
संचार॥ शिरकंपनअँगुरीनतेतरजनअरुभौचार८३२॥
यथा ॥ निकसतहीपटनीलते तेरेतनकीज्योति ॥ चपला
अरुघनश्यामकी हियेआनिसुधिहोति ८३३ यमुनातट
मोसों कहीतूजुबातमुसुकात ॥ सदारहतचितपरचढ़ीभू
लिहुबिसरनजात८३४॥ चिंतालक्षण ॥ अनपायेप्रियबच
नको ध्यानमाहिंबितजाइ ॥ सोचिंताजहितापअरु औं
शूश्वासलखाइ ८३५ दृगनमूंदिभौंहनजुरै करपैराखक

पोल॥कौनशोचमेंबैठितिय इहिबिधिभईअडोल ८३६॥
तरकलक्षण ॥ कहियेतरकबिचारिके संशयतासुविभाव ॥
शिरचालनभृकुटीचपल ताकोहैअनभाव ८३७ संशय
नहींबिचारिमें इतित्रयअध्योसाइ ॥ चौथोबिप्रतिपत्तमें
चारितरकसमुदाइ ८३८ ॥ संशयआत्मकतर्कउदाहरण ॥
मनमोहनछबिलखतहौं भूलिगईसबऐंठि ॥ अबजग
गतिलास्योकहै हौंभूलीकीपैंठि ८३९ ॥ बिचारात्मकतर्क
उदाहरण ॥ बोलतहैंइतकागअरु फरकतनैनबनाइ ॥ याते
यहजान्योपरत प्रीतममिलिहैंआइ ८४० ॥ अध्योशायात्मकविप्रतिपत्यात्मकलक्षण ॥ करिबिचारमेटेसकलसोईअध्योशाइ॥ परैनजहँपरतीतिसो बिप्रतिपत्यबनाइ८४१॥
अध्योशायात्मकतर्कउदाहरण ॥रच्योकामयहमुकुरकै कमल
भयोअविदात॥किधौंचन्द्रभुवअवतर्योकछुजान्योनाहिं
जात८४२॥ विप्रतिपत्यात्मकतर्कउदाहरण॥ अनिलज्वाल
नाहिंकहिसकत करतशीतयहअंग ॥ कलाशरदशशि
कहोतो दिनतेकौनप्रसंग ८४३ ॥ मतिलक्षण ॥ ज्ञान
यथारथकोजहां तहँकहियेमतिभाव ॥ आगमशोचबि
भावअरु शिष्यादिकअनुभाव ८४४ ॥ यथा ॥ कोऊबर
ऐपुरुषयश कोऊबरऐबाम ॥ सुकबिसकलतजिकैसदा
बरणतहैहरिनाम ८४५ धर्मनीतिप्रभुप्रीतियुत साधु
प्रीतितहँहोइ ॥ चितहितपरउपकारमें गानजानियेसो
इ ८४६ ॥ प्रीतलक्षण ॥ धृतकहियेसंतोषको सत्या
तासुविभाव ॥ दुखकोसुखकरिमानई धीरजादिअनुभा
व ८४७ ॥ यथा ॥ हार्योमदनचलाइशर शशिकरशे

ललमाइ॥यहपिककरिरीतीकहूँ कहाडरावतआइ ८४८ कौननचावतजगतको फिरैआपनेमाथ ॥ बांधदईहैजी विका दईजीवकेहाथ ८४९ ॥ हर्षलक्षण ॥ हर्षभावपि यबसतलखि मनप्रसादहूजोइ ॥ मनप्रसन्नपुलकादि लहि जानतहैसबलोइ ८५० ॥ यथा ॥ तियघटभरिउम ड्योहरष योंभेंटतनंदलाल ॥ ज्योंबर्षतहीश्यामघनज लझिहरतभरिताल ८५१ होतएकहीभवनमें आनँदज नमेनन्द॥रामजन्मतेचौदहौभुवनभयोआनन्द ८५२॥ ब्रीड़ालक्षण ॥ जोकाहूकीआनिते होतढिठाईहान ॥ म खनावनआदिकजहां ब्रीड़ालीजैजान ८५३ ॥ यथा ॥ पियकछुबाचनतेदिया तियतेलयोमंगाइ ॥ मुखछबिल खिइतयेऊके उतवहमुरीलजाइ ८५४ सखिनसंगखे लतहुती ठाढ़ीसहजस्वभाय ॥ पियआवतऔचकचि तैं बैठिगईशिरनाय ८५५ ॥ अवहिथालक्षण ॥ समगो पनव्यवहारको सोअवहीथाभाव ॥ हैविभावहियकुटि लइव हीलावनअनुभाव ८५६ ॥ यथा ॥ सौतिशृंगार विहारितियघूंघटपटमुखल्याइ ॥ खांसीकोमिसठानिके हांसीरहीदुराइ ८५७ ॥ चपलतालक्षण ॥ रागद्वेषआदि कनके होतिचपलताआइ ॥ कियेशीघ्रताआदिते तन मेंहोतिलखाइ ८५८ ॥ यथा ॥ इततेउतउततेइतहि चमकिजातबेहाल॥दिखबेकोघनश्यामको भईदामिनी बाल८५९॥ श्रमलक्षण ॥ रविगतिकैअतिबलाकियेखेदहो तजोआइ॥सोईश्रमस्वेदादिजोमनमेंहोतलखाइ८६०॥ यथा॥निजकांधेतियबांहधरितियकटिधरिनिजबांह॥मंद

मंदसाखिसेजतेल्यावतमंदिरमांह ८६१ तनतोरतिनासा
चढ़ै सीसीभरिश्रँगिरानि ॥ श्रंगदबावतबालको दाबि·
लेतमनश्रानि ८६२ ॥ निद्रालक्षण ॥ सोनिद्राजोइन्द्रि
यन तजिमनतुचासश्राइ ॥ श्रमश्रादिकतेहोतलखि
स्वपनादिकतेजाइ ८६३ ॥ यथा ॥ क्षणकहोततनमेंपु
लिक क्षणश्रधरनमुसकान ॥ यातेश्रथतियकोपरति
पियसँगसोवनजान ८६४ स्वपनेमेंमिलिलालसों रही
बाललपटाय ॥ बांहचलावतिभुजगहति बिहँसनिदेति
जनाय ८६५ ॥ स्वप्नलक्षण ॥ तुचहंतजिमनयमपुरी बसै
सोस्वप्नबखान ॥ होतनींदतेपरतहै श्वासादिकतेजान
८६६ ॥ यथा ॥ नैनमूंदिवीसुधिपरीसोवतिबालबनाइ ॥
सांसछरीकेवलरही बेसरिमुकुतिनचाइ ८६७ ॥ वैपथल
क्षणं ॥ वैपथजागिविजानिये नींदछुटेतेहोइ ॥ दृगमूंद
नश्रँगरानश्ररुजिम्यादिकतेजोइ ८६८ दृगनमूंदिश्र
लसायपुनि श्रंगमोरश्रँगराइ ॥ बामजागहूश्यामतन
दीनोकामजगाइ ८६९ पियश्राहटलखिबालदृग यों
युगउघरेप्रात ॥ ज्योंरविद्युतिसन्मुखलखे मुंद्योकमल
खुलिजात ८७० ॥ श्रालस्यलक्षण ॥ व्याधिखेदगर्वादि
ते श्रालसउपजैश्रानि ॥ उठबेकीसामर्थ्यता तेमनली
जैजानि ८७१ ॥ यथा ॥ तियलावतहीतैलपिय प्या
लोलियोउठाइ ॥ गर्भभारतेउठतिनाहिं मांगतिहाहाखा
इ ८७२ कौनछकोछबिसोमरी यहऐंडानिविशेखि ॥
श्ररुमगढीलीडगभरन श्ररसीलीकीदेखि ८७३ ॥ मदल
क्षण ॥ मदिराविद्याद्रव्यते योबनश्रायेगात ॥ उपजत

हैमदहावतिह कढ़तअलसगतबात ८७४ ॥ यथा ॥
क्षणकरहतिकरलैचखक क्षणमुखरहतिलगाइ ॥ आप
करतिमदपानपै छकवतिपीकोजाइ ८७५ जबतेकामि
निकान्हके तकेमदभरेनैन ॥ तबतेवौबिनुमदछके छके
रहतरसऐन ८७६ ॥ मोहलक्षण ॥ मदभयआदिविभा
वते चितजोबेचितहोइ ॥ वहैमोहअज्ञाननतातेलहियत
हैसोइ ८७७ ॥ यथा ॥ लकुटिगिरीछुटिहाथते मुकुटप
स्योभुकिपाइ ॥ मोहनकीयहगतिकरी राधेबदनदिखा
इ ८७८ ॥ उन्माद लक्षण ॥ द्रव्यहानिबिरहादिये हैउ
न्मादबिभाव ॥ बिनबिचारआचारअरु बौराईअनुभा
व ८७९ ॥ यथा ॥ क्षणरोवतिक्षणबाकिउठति क्षणगहि
तोरतिमाल ॥ यमुनाकेतटजातयहभयोबालकोहाल
८८० ॥ अपस्मारलक्षण ॥ यक्षरक्षग्रहभूतअरु भयदुख
आदिविभाव ॥ अनुभववैपथफेनमुख अपस्मारकोभा
व ८८१ ॥ यथा ॥ कहाबजायोवेनुयह नारिनकोजिय
लेन ॥ फरफरातक्षितिवहपरी मुखमेंआयोफेन ८८२
कतदिखाइकामिनिनको दामिनिकोयहबांह ॥ थरथरा
तिशीतनफिरै फरफरातिघनमांह ८८३ ॥ जड़तालक्षण ॥
ज्ञानघटैअरुगतिथकै निरनिमेषरहिजाइ ॥ प्रियअप्रि
यदेखैसुनै सोईजड़ताभाइ ८८४ ॥ यथा ॥ पियलखि
योंलागतअचल तियहगतारेश्याम ॥ मनाथिरह्वैबैठे
भवँर कमलनिकोकरिधाम ८८५ बाटचलतिननदी
कह्यो कहांगिरीतूमाल ॥ हियेऔरतकिचकितह्वै थकि
तह्वैरहीबाल ८८६ ॥ बिषादलक्षण ॥ चाह्योहोइनअन

चह्यो भयेदेखिदुखहोइ ॥ सोबिषादअनुभावतिहि ती
नभांतिजियजोइ ८८७ उत्तमदृढ़ह्वैकैहिये शोचैकछुक
उपाय ॥ मध्यमजोअनमनकिये ढूंढ़ैकोउसहाय ८८८
अधमबदनअतिसूखके पीरोहोइनिदान ॥ भरिभरिले
तउश्वासअरु करैभागअपमान ८८९ ॥ यथा ॥ चली
श्यामपैबामतहँ मिलीननदिपथआइ ॥ यहशोचति
किहिछन्दछलि हरिसोंमिलियेजाइ८९० ॥ व्याधिलक्षण॥
कामकलेशभयादिते व्याधिज्वरादिकहोइ ॥ करचरण
नकोफेरिबो धीरदहादिकहोइ ८९१ ॥ यथा ॥ निरखि
निरखितियकीव्यथा थकितभयेसबलोग ॥ समुझनप
रतवियोगहै कैकछुडारयोयोग ८९२ अरीबामछबिश्या
मकी योंपर्यंकलखाइ ॥ मानोकागजपैलिखी मसिकी
लीकबनाइ ८९३ ॥ मरणलक्षण ॥ कछुकव्याधिवाघात
ते मरणहोतहैआनि ॥ दृगमूंदनश्वासाजलन हिक्काते
रहिजानि ८९४ ॥ उदाहरण ॥ तरफिलरफितुवखेतमें
तुवबैरिनकेलोग ॥ कोऊमरैकोउमरतको कोऊमरिबेयो
ग ८९५ ॥ इतिव्यभिचारीभावसमाप्तम् । अथशृङ्गारवर्णनं ॥
कहिविभभावबिभावपुनि अनुभावरुचिरभाव ॥ अथव
र्णनशृङ्गारघन जिहिसुनिबाढ़तचाव ८९६ ॥ शृङ्गाररस
लक्षण ॥ लहिविभावअनुभावचर भावजबैरतिभाव ॥
पूरणप्रकटेरसकहत तिहिशृँगारकबिराव ८९७ पहिले
उपजतपरस्पर दीपतिकेरतिभाव ॥ ऋतुआदिकउद्दी
पनते पुनिचितबाढ़तचाव ८९८ पुनिरतिहीतेआइकै
प्रकटहोतअभिलाख ॥ पुनिप्रकटतअभिलाषते चिंता

यहमनराख ८९९ चिन्तातेप्रकटतसकल मनव्यभि
चारीआइ॥तिनकोसहकारीकहैं कबिमनमैंठहराइ ९००
जबंगतिकरिअनुभावको बाहरदेतलखाइ ॥ तबनिक
सतहैसङ्गही येसहकारीआइ ९०१ बेमनमेंरतिभावको
ज्योंसबकरतसहाव॥रतिअनुभावनसहकरति त्योंइनके
अनुभाव ९०२ भावजबैअनुभावते येसहकारीआनि ॥
तबअतिपरमटकारते रतिकोयहजियजानि ९०३ पूर
णह्वैरतिभावजबयहिबिधिप्रकटैआइ॥ताहीमैंमनमगन
भो रसशृंगारकहिजाइ ९०४ ॥ रसशृंगारउदाहरण ॥
मोहनमूरतिश्यामकी कामिनिदेखिलुभाइ ॥ रीझ
छकीमोहीजकी रहीएकटकलाइ ९०५ पियतननि
रखिकटाक्षसों योंतियमुरीलजाइ ॥ पासआइमुसु
काइकै अतिदीनतादिखाइ ९०६ नेहजनाइबनाइ
हरिमोमनलियोलुभाइ ॥ ताक्षणतेउनबिनसखी ना
कछुऔरसुहाइ ९०७ ॥ शृंगाररसभेदकथनं ॥ क
हैसँयोगबियोगगहि द्वौशृंगारसबलोग ॥ मिलन
कहतसंयोगअरु बिछुरनकहतबियोग ९०८ जानुसँ
योगदरसपरस बाहरकीजोरीति ॥ दंपतिहियकेमोद
को करिसंयोगप्रतीति ९०९ ॥ संयोगशृंगारयथा ॥
निजचावनसोंबैठिकै असमुखलेतनवीन ॥ दोऊतन
पानिपनमें दोऊकेदृगमीन ९१० लैरतिसुखाविपरीत
ज्योंरचीप्रियाअरुमीत ॥ दोऊनूपुरपरिभईइकरसनाकी
जीत ९११ ॥ मिलनस्थानवर्णनं ॥ सखीसदनसूनेसदम
उपवनमिलनसनान ॥ औरठौरहूकैसकत दंपतिमि

लनसयान ६१२ ॥ सखीस्थानकोमिलबो ॥ कान्हबनाइ कुमारिका सखीगेहमेंल्याइ ॥ चोरमिहचुनीतेंदई लै राधिकेमिलाइ ६१३ ॥ सूनेसदनकोमिलबो ॥ धनसूने घरपाइयो हरिलीनीउरलाइ ॥ सूनेगृहलहिलेतहैं ज्यों धनचोरउठाइ ६१४ ॥ उपवनकोमिलबो ॥ फिरतिहु तीतियफूलके भूषणपहिरिअतूल ॥ हरिलखिउपवन फूलमें भईऔरहीफूल ६१५ ॥ बिपिनकोमिलबो ॥ हरि कोलखिकैराधिका ठहराईयहभाइ ॥ मनुतमालतरुको गई पुहुपलताउलपटाइ ६१६ ॥ स्नानकोमिलबो ॥ दोऊसरवरन्हातअरु फिरिफिरिचुभुकीलेत ॥ परसि लहरजलपरसपरसुरतिपरमसुखदेत ६१७ चुभकी लैलैमिलतअरु उठतदूरिनितजाइ ॥ धरसिकम्प रोमांचइइन्हि दुखोसरोवरन्हाइ ६१८ ॥ बियोगशृंगा. रउदाहरण ॥ इतलखियंतवहतियनहीं उतलखि यतनहिंपीय ॥ आपसमाहिंदुहूनमिलि पलटगयेहैं जीय ६१९ ॥ बियोगशृंगार भेदकथनं ॥ पुनिबियोगशृंगा रजो दीनोहैसमुझाइ ॥ ताहीकोइनचारिविधि बर्णतहैं कबिराइ ६२० इकपूर्वाअनुरागअरु दूजोमानबिशे खि ॥ तीजोहैपरवासअरु चौथोकरुणालेखि ६२१ पूर्वानुराग लक्षण ॥ जोपरिलैसुनिकैनिरख बढ़ैप्रेमकी लाग ॥ बिनमिलापजोबिकलता सोपूर्वाअनुराग ६२२ यथा ॥ होइपीरजोअंगकी कहियेसबनसुनाइ ॥ उप जीपीरअनंगकी कहीकौनबिधिजाइ ६२३ ॥ पूर्वानुराग मध्यसुता नुरागयथा ॥ जाहिबातसुनिकैभईतनमनकीगति

आन ॥ ताहिदिखायेकामिनी क्योंरहिहैमोप्रान ६२४
पूर्व्वानुराग मध्यतृष्णानुराग उदाहरण ॥ आपहिलागिलगा
इँदृग फिरिरोवतयहभाइ ॥ जैसेआगिलगाइकोउ ज
लछिरकतहैआइ ॥ ६२५ हियेमटकियामाहिंमथि डी
ठरईसोग्वारि ॥ मोमनमाखनलैगई देहदहीकोडा
रि ६२६ ॥ मानमेंलघुमानउपजबेको उदाहरण ॥ औरबा
लकोनामजो लयोभूलिकैनाह ॥ सोअतिहीबिषब्याल
ज्यों छयोब्यालहियमाह ६२७ ॥ मध्यमान उदाहरण ॥
पियसोहनसोहनभई भवरिसधनुषउतारि ॥ रसकृपाण
मारनलगी हँसिकटाक्षसोनारि ६२८ ॥ गुरुमान उदाह
रण ॥ पियदृगअरुणचितैभई यहतियकीगतिआइ ॥ कम
लअरुणतालखिमनों शशिद्युतिघटबनाइ ६२९ लहि
मूंगाछनिदृगमुरनि यहमनलह्योप्रत्यक्ष ॥ नखलायेति
यअक्षइन पियनछपायेपक्ष ६३० ॥ गुरुमान छुटबेकोउ
पाय ॥ श्यामजुमानछुटाइये समताकोसमुझाय ॥ जो
मनाइयेदैकछू सोहैदानउपाय ६३१ सुखदैसकलसखी
नको करिकैअपनीओर ॥ बहुरिछुड़ावैमानसो भेदजा
निसबठोर ६३२ मानसुचावइबानताजि कहैओरपर
संग ॥ सोईउपेख्याजानिये बर्णतबुद्धिउतंग ६३३ उप
जैजिहिसुनिव्यातिक्रमकहियेइहिबिधिबात॥सोप्रसंगबि
ध्वंसहै बर्णतबुधिअवदात ६३४ जोअपनेअपराध
सों रूसीतियकोपाइ ॥ पांइपरेतिहिकहतहैं कबिजनप्र
णतउपाइ ६३५ ॥ सामोपाय उदाहरण ॥ हमतुमदोऊए
कैहैं समुझिलेहुमनमाहिं ॥ मानभेदकोमूलहै भूलिकी

जियेनाहिं ६३६ ॥ दानोपाय उदाहरण ॥ इनकाहूसेयोनाहिं पायसेवतीनाम ॥ आजुकाल्हिबनिचहततुव कुचसंव सेयोवाम ६३७ पठयेहैंनिजकरनगुहिलालमालतीफूल॥ जिहिलहितुवहियकमलते कढ़ैमानअतितूल ६३८ ॥ भेदोपाय उदाहरण ॥ लालनमिलिदेहितुनसुख दहियेसों तिनप्रान ॥ उलटीकरहिनिदानजिन करिप्रीतमसोंमान ६३९ शेषअगिनकीअनलते तूजिनजारैनाह ॥जिहितरुवरदहियतनहीं रहियतजाकीछाह ६४० ॥ उपेक्षाउपाय उदाहरण ॥ बेलीचलिविटपनामिली चपलाघन तनमाहिं ॥ कोउनहींक्षितिगगनमें तियारहीतजिनाहिं ६४१ ॥ संगविध्वंसउदाहरण ॥ कहतपुराणजु रैनिको बितवतिहैकरिमान ॥ तेसबचकईहोहिंगी अगिलेजन्मनिदान ६४२ ॥ प्रणतउपायउदाहरण ॥ पिय तियकेपांयनपरत लागतयहअनुमान ॥ निजमित्रन केमिलनको मानहुआयोभान ६४३ पांवगहतयोंमान तिय मनतेनिकस्योहाल ॥ नीलगहतज्योंकोटके निकसजातकोतवाल ६४४ ॥ अपरअंगमानछुटबेकी विधि ॥ देशकालबुधिबचनपुनि कोमलधुनिसुनिकान ॥ औरो उद्दीपनलहै सुखहीछूटतमान ६४५ ॥ अथपरवासबिरह लक्षण ॥ तृतियवियोगप्रवासजो पियप्यारीहैदेश ॥ जा मेंनेकसुहातनाहिं उद्दीपनकोलेश ६४६ ॥ यथा ॥ नेह भरीहियमेंपरी अग्निविरहकीआइ ॥ श्वासपवनकी आइकै करिहैकौनबलाइ ६४७ शिवामनावनिकोगई विरहिनपुहुपमँगाइ ॥ परसतपुहुपभसमभये तबदेशि

व्रहिचलाइ ६४८ ॥ करुणाविरहलक्षण ॥ शिवजार्‌यो
जबकामतब रतिकियअधिकविलाप ॥ जिहिविलाप
महँतिहिसुनी यहधुनिनभतेआप ६४६ द्वापरमेंजब
होइगो आनिकृष्णअवतार ॥ तिनकेसुतकोरूपधरि
मिलिहैतुवभरतार ६५० यहसुनिकैजोविरहदुख रति
कोभयोप्रकास ॥ सोईकरुणाविरहसब बर्णतबुद्धिनिवा
स ६५१ पुनियाहूकरुणाविरह बर्णतकबिसमुदाय ॥सुख
उपायनारहैजिय निकसनकोअकुलाय ६५२ जासों
पतिसबजगतसो पतिसोंमिलतनआइ ॥ रेजियजीवो
विपतको क्योंयहतोहिंसुहाइ ६५३ सुखलैसंगजिहि
जियतज्यों पियानरक्षककाज ॥सोऊअबदुखपाइकै च
लोचहतहैआज ६५४ ॥ वियोगशृंगारदशदशाकथनं ॥
धर्‌योवियोगशृंगारमें कविजोदशादशल्याइ ॥लक्षणस
हितउदाहरण तिनकेसुनोबनाइ ६५५ मिलनचाहउप
जैहिये सोअभिलाषबखान ॥ पुनिमिलिबेकेशोचको
चिंताजियमेंजान ६५६ लखैसुनैपियरूपको सुमिरैसुमि
रणसोइ ॥ पियगुणरूपसराहिये वहैगुणकथनहोइ
६५७ सोउद्वेगजोविरहते सुखददुखदह्वैजाय ॥ बकै
औरकीऔरजो सोप्रलापठहिराय ६५८ सोउन्मादजो
मोहते व्यथाकाजकछुहोइ ॥ कृशतातनुपियराइअरु
तापव्याधिहैसोइ ६५९ जड़तावर्णतअचलजहँ चित्र
अंगह्वैजाइ ॥ दशमदशामिलिदशमदश होतविरहते
आइ ६६० ॥ अभिलाषउदाहरण ॥ अतिह्वैहैंबहुदोषज्यों
पियबिदेशतेआइ ॥ व्यथापूंछिसबविरहकी लैहैंअंग

लगाइ ६६१ जेहिलखिमोहूंसोंबिमुख भैचकोरहैनैन॥
रेविधिक्योंहूंपायहौं तेहितियमुखलखिचैन ६६२ ॥ चिं
ता उदाहरण ॥ इतमनचाहतापियमिलन उतरोकतहैला
ज॥ भोरसांभ्कोएकक्षण किहिविधिबनैसमाज ६६३
कौनभांतिबहशशिमुखी अमीबेलिसीपाइ ॥ बैननैनबु
भाइकै लीजैअंगलगाइ६६४॥ सुमिरण उदाहरण॥ खट
करहीचितअटकजो चटकभरीबहुआइ ॥ लटकमटक
दिखरायकै सटकगईमुसकाइ ६६५ कहाहोतहैबासिर
हे आनदेशकैअन्त ॥ तोमैंजानोहौंजोबसो मोमनमेंक
हुकन्त ६६६ चन्द्रनिरखिसुमिरतबदन कमलबिलोक
तपाइ ॥ निशिदिनललनाकीसुरति रहीलालहगछा
इ ६६७ बिछुरनक्षणकेहगनमें भरिअंशुवाठहरान॥ अ
रुससकतिधनगलगहनकसकतिहैमनआन ६६८ यापा
वसऋतुमेंकहो जीजैकौनउपाय॥ दामिनिलखिसुधिहो
तिहै वाकामिनिकीआय ६६९ ॥ गुणकथन उदाहरण॥ दि
नदिनबढ़िघटिआइकत देतमोहिंदुखद्वन्द॥ पियसुखश
ठकरिहैनतू अरेकलंकीचन्द ६७० जिहितनचन्दनब
दनशशिकमलजमलकरिपाइ ॥ तिहिरमणीगुणगणग
नत क्योंनहियेसियराइ ६७१॥ उद्वेग उदाहरण ॥ जरत
हुतीहीअग्निते तापैचन्दनल्याइ ॥ बीजनपवनडुलाइ
इनि दीन्होअधिकजराइ ६७२ कमलमुखीबिछुरतभये
सबैजरावनहार ॥ तारायोंचिनगीभई चन्दाभयोअँगा
र ६७३ ॥ प्रलाप उदाहरण ॥ श्यामरूपघनदामिनी
पीताम्बरअनुवारि ॥ देखतहीयहललितछबि मो

हहनतकतमारि ६७४ तुवबिछुरतहीविरहयह कि
योलालकोहाल ॥ पपिहाबोलतयहकहत मोहिंपु
कारंतबाल ६७५ ॥ उन्मादउदाहरण ॥ क्षणचूंबति
क्षणउरधरति बिनदृगराखतिआनि ॥ कमलानिकोतिय
लालके आननकरपगजानि ६७६ कमलइसनमुखध
रतवह पुलकततनलपटाइ ॥ लैश्रीफलहियमेंगहततसु
नतकोकिलनजाइ ६७७ ॥ व्याधिउदाहरण ॥ विरहतची
तनदूबरीयोंपटपंखलखाइ॥मनुसितघनकोसेजकैदामि
निपौढ़ीआइ ६७८ मनकीबातनजानियत अरी
श्यामकोगात ॥ तोसोंप्रीतिलगाइकै पीतभयेजिनजा
त ६७९ ॥ जड़ताउदाहरण ॥ नेकनचेतलऔरबिधि
थकितभयोसबगाउँ ॥ मृतकसजीवनमन्त्रहै वाहि
तिहारोनाउँ ६८० तुवबिछुरतहीकान्हके यहगति
भईनिदान ॥ ठाढ़ेरहतपषाणसे राखैमोरपषान ६८१
दशमदशाउदाहरण ॥ बिदितअहैयाजगतमें वर्णिगयेप्रा
चीन॥पियबिछुरेसबसरतहै ज्योंजलबिछुरेमीन ६८२
पातीवर्णन॥व्यथाकथालिखिअंतकी अपनेअपनेपीय॥
पातीदैहैऔरसब हौंदेहैंयहजीय ६८३ पियबिन
दूजोसुखनहीं पातीकेपरिमाण ॥ याचतमाचतमोदत
न बाँचतबाँचतप्राण ६८४ नैनदेखिबेकोचहैं प्राण
धरनकोहीय ॥ लहिपातीभ्रगरोपस्यो आनिछुड़ावैपी
य ६८५॥संदेशोवर्णन॥पकरिबांहाजिनकरदई विरहशत्रु
केसाथ ॥ योंकहियोवानिठुरसोंऐसेगहियतनाथ ६८६
योंकहियोवानिठुरसों यहगतिमेरीजाइ ॥ जिनछुड़ाइ

निजअंगते दई अनङ्ग मिलाइ ६८७ ॥ अथवियोगमय बारहमासावर्णनं ॥ प्रथमचैत्र ॥ धनुषबाणदोऊनये दैफूलन कैचैत ॥ जैतवारसबजगतको कियोकामकमनैत ६८८ श्यामसंगजिहिकेसुनत बाढ़तमोदतरङ्ग ॥ सोविहंग धुनिकरतया चैतमाहिंचितभङ्ग ६८९ ॥ बैशाखबर्णनं ॥ लाखयतनकहिराखिये कैजारितनराख ॥ शाख शाखजोढाखकी फूलरहीबैशाख ६९० पुहुपरूपइनि द्रुमनिमें आगिलगीहैआइ ॥ जामेंजरियेभवँरस व कारेभयेबनाइ ६९१ ॥ बसंतसमीरबर्णनं ॥ प्राण नाथबिनुआइइन कोराखैगहिहाथ ॥ पवनप्राणकोगो तगिनि लियेजातनिजसाथ ६९२ ॥ ज्येष्ठवर्णनं ॥ ब्यं जनलैकरमेंधरति बाहरदेतिनपाइ ॥ वृषआतपबिन श्यामघन दासीकस्योबनाइ ६९३ जेठपवनकरिगवन यह दीनीअवनिजराइ ॥ बिनाश्यामघनदवनसहिकेहू भवननजाइ ६९४ ॥ आपाढ़बर्णनं ॥ हाथशरासनबाण लैमघवाशासनमानि ॥ मनभावनबिनुप्राणइन सावन लीनेआनि ६९५ ज्योंसागरसारितालता द्रुमनलगाई अंग ॥ त्योंसागरमिलवतक्यों सोतनभावनिसंग ६९६ भादौंबर्णनं ॥ भादौंकोदिनकठिनबिन यादवमोहिंसहाइ ॥ तापैक्षणदाकीतड़ित क्षणक्षणदागतिआइ ६९७ रीदा मिनिघनश्याममिल कतमोसनमुखआइ ॥ हहनलगी हैसौतिलौं अपनीचटकदिखाइ ६९८ ॥ कुवारबर्णनं ॥ कुम तिभयेहैंपितृसो वेऊआवतधाम ॥ तिहिकुवारमेंजायकै अन्तबसेहैंश्याम ६९९ आजुकलंकीचन्द्रयह दोषाको

सँगपाइ॥दिनसीज्योंनिकुवारकजीमारातिहैंआइ १००० कार्त्तिकवर्णनं ॥ सबैप्रभातअन्हानकोयहकातिकमेंन्हात ॥ मैंअपनेअंशुवानिसों बाढ़ीसदाअन्हात १ औरदेतहैंदीपसब जिनकेकन्तसमीप ॥ इनवारेहरिनेहनोरोमरोममेंदीप २ ॥ अगहनवर्णनं ॥ अन्तकहैयहआपने लीपनकाजानिदान ॥ आयोअगहननामधरि गहनतियनकेप्रान ३ कठिनपस्योहैअवधिलौं अबतनरहिबोसास ॥ प्राणसंगहरिलैगये मासरहतहरिआस ४ पौषवर्णनं ॥ भानुतेजसबतेसरस जगतमाहिंदरशाइ ॥ सोऊजानिधनराशिमें छप्योशीतडरपाइ ५ शीतअनीतनिहारिकै तजीप्राणतेआस ॥ मित्रहोतधनराशिमें जोनमित्रधनपास ६ ॥ माघवर्णनं ॥ माहशीतयहमीतबिनु करिअनीतलपटाइ ॥ यातेनिशिदिनअग्निमें तनशोधतहीजाइ ७ माघमासलहितेतही यहदुखभयोअनन्त ॥ क्योंबसन्तअबखेलिहैं बसेअंतहैंकन्त ८ फाल्गुनवर्णनं ॥ भागभरीअनुरागसों हिलिमिलिगावतराग ॥ मोहिंअभागिनिफागहीबिधिदीन्होबैराग ९ मनमोहनबिनाबिरहते फागरच्योइनचाल ॥ पीरोरँगअंगनछयो अँशुवनझरतगुलाल १० ॥ अथ सामान्य श्रृंगार अरु मिश्रितश्रृंगारबर्णनं ॥ नहिंसंयोगबियोगजहँ ज्योंपियबैठेद्वार ॥ तहँसामान्यशृँगारहै कविजनकियोबिचार ११ जहँसंयोगमेंबिरहके बिरहमांझसंयोग ॥ तहँमिश्रितशृंगारकहि बर्णतहैंकबिलोग १२ सौतुकअरुसपनेनिरखिसुनिपियाबिछुरनबात ॥ दम्पतिकोनितआइकै सुखमेंदु

खड्केजात १३ त्योंहींसगुनसँदेशाअरु पातीहूकोपाइ॥
अनुरागनको बिरहमेंहरषहोतहैआइ १४ उदाहरणं
इनदुहुनके निजमनमेंअवरेखि ॥ गमिष्यतिपतिका
माहिंअरुआगमिष्यतिमेंदेखि १५ ॥ वाक्यभेद ॥ तिय
पियसोंपियतीयसों तियसखिसोंसखितीय॥सखिसखि
सोंसखिपीयसों कहैसखीसोंपीय १६ कहुँप्रश्नोत्तरहो
तकहुँ प्रश्नोत्तरकहुँहोइ ॥ सोतिनिसंभुवैहोततिहि वा
कपतीनिधिजोइ १७ ॥ इतिश्रृंगाररससमाप्तं ॥ अथहा
स्यरसआदिआठौरसवर्णनं॥कहिशृँगारअबकहतहैं आठौ
रससबल्याइ ॥ जिनतेपूरणहोतहैं नवरसगिनतीआ
इ १८ ज्योंथायीसबरसनकी न्यारीन्यारीहोत ॥ त्यों
आलम्बनहूँसदाभिन्नभिन्नउद्दोत १९ आलम्बनअं
कितविषे उद्दीपनह्वैजात॥बहुरिहोतअनभावहू भिन्न
भिन्नआविदात २० सातिकतमचरभावको सबतेअनु
भवजान ॥ मनव्यभिचारिनकोसदा सहकारीपहिंचा
न २१॥हास्यरसलक्षण॥ परिपोषकजोहँसीको सोईहा
सरसजान॥बिकृतबचक्रमसंगतेनितउपजतहैआन २२
मुखअनुनतप्रसन्नता तेअनुभावविशेख ॥ ब्रह्मदेवति
हिकहतकवि बर्णश्वेतअविरेख २३ बातकहतापियभूलि
फिरि लीन्हीबर्णसँभारि ॥ प्राणबसीसुनिकैकछू मनमें
हँसीविचारि २४ ॥ हास्यत्रिविध ॥ दशनखुलतनहिंमंद
सें धुनिमध्यममेंदोइ ॥ बहुहँसिबोअतिहासमें हासती
निबिधिजोइ २५ ॥ मन्दहास्यउदाहरण ॥ ग्वालिनवेष
बनाइहरि मिलेतियनमेंआनि ॥ गरुयेमनतवचितव

सी हरुवेहितपहिंचानि २६॥ मध्यमहास्यउदाहरण॥ भूलि
चलेजबपीतपट तबसुजाइढिगलाल ॥ हमेंदयोयहब
चनंकहि बलधुनिसोंहँसिबाल २७॥ अतिहास्यउदाहरण॥
खाइचुनौतीकोगयो पाननमेंजबलाल ॥ देखतहीतब
हँसिपरी खिलखिलायकैबाल २८॥ करुणारसलक्षण॥
परपोषकजोशोकको सोकरुणारसहोइ ॥ इष्टनाशबि
पतादिसब येबिभावाजियजोइ २६ भ्रमनपतनविपतन
स्वसन जानिलेहुअनुभाव॥ यमसोदेवताकहतहैं बर्णक
पोतसहाव ३० ॥ शोकस्थायीभावकोउदाहरण ॥ बिनुतुव
दलसन्मुखभये अरिनारीबिलखाइ ॥ करुणबीजउरमें
बये आगेहीतेल्याइ ३१ ॥ करुणारसउदाहरण॥ तुवअरि
शोकनतियलई श्वासअरानिदृगवार ॥ कहुँगाहतवन
कोफिरै जोहतकहूंपहार ३२ बिलखिकहतिमन्दोदरी
गाहिदशमुखकोगात ॥ बीसकरणहूँराखितुम सुनतनमे
रीबात ३३ सोइजागिबोआपनो मोनैननकसाथ ॥
लैसबइनकीनींदको सुखसोयेतुमनाथ ३४ ॥ रौद्र
रसलक्षण ॥ परपोषकजोकोपको वहैरौद्ररसजान ॥ दु
सहवैरबैरीलखन योबिभावपहिंचान ३५ कंपधरम
आवेगप्रति बरमअंशुअनुभाव ॥ रुद्रदेवताजानिये
बरणअरुणचितचाव ३६ ॥ कोपथायीभावकोउदाहरण॥
पियऔगुणसुनिजोजग्यो रिसअंकुरमनआइ ॥ सो
बिनुबढ़िनिकसेअधर गुणसुखतेनलखाइ ३७॥ रौद्ररस
उदाहरण ॥ निरखतजावकभालपर पावकसीह्वैबाल ॥
अपनेहियतेतोरिकै पियहियदीन्हीमाल ३८ मुकुतासेल

नपंथही गहिगहिकोधनसत्थ ॥ मींजिबालकाहाथते क
रतजातदशमत्थ ३९ ॥ बीररसलक्षण ॥ परपोषकउत्सा
हकी सोइबीररसलेख ॥ पूरबकीअसमर्षता सोबि
भावअबिरेख ४० उग्रताइअरुप्रश्नता पुलकादिक
अनुभाव ॥ जानदेवताइंद्रको गौरबरणतिहिगाव ४१
उत्साहथायीभावकोउदाहरण ॥ सत्यदयारणदानको जब
अवसरनियराइ ॥ उदयकरतहैदरहिये हरषआगेही
आइ ४२ ॥ बीररसउदाहरणचतुर्विधि ॥ बीरचारिजग
प्रकटभे सत्यदयारतदान ॥ धर्मतनयशिवरामबल
इत्यादिकतेजान ४३ प्रकटजेचारोबीरजे चारिपुरुष
कोपाइ॥ सोचारोपूरणभये दुरतनमनमेंआइ ४४ ॥
सत्यबीरउदाहरण ॥ तिनशिरनायेपगनपर जिनजिनधरी
मरोरि ॥ कस्योनबीनोजगतसब एकसत्यकेशोरि ४५
हैदरतेजीतैनकोउ यहजानतसबकोइ ॥ धरमहितेजय
होतहै पापहितेक्षयहोइ ४६ भज्योबहत्तरबारजो युद्ध
माहिंमुखमोरि ॥ हैदरनेमुखबोलिहित दियोराजतिहि
छोरि ४७ ॥ दयाबीरउदाहरण ॥ घेरिलियेसुलैमानजब
गराजिसिंहचहुंओर ॥ शाहनशाहउमाहसों लियबचाइ
बरजोर ४८ ॥ रणबीरउदाहरण ॥ ज्योंसुभटनसँगचलत
है हैदरधारिउछाह ॥ ज्योंनारिनसँगआइकै होरीखेलत
नाह ४९ जिहिखैबरतेजाइकै आयेसबमुखमोरि ॥
हैदरनेतिहिद्वारको बिहँसतडास्योतोरि ५० निकसनि
तेअरिअंगको हाथतिहारोपाइ ॥ नेजाकीपोरीरही
सबैहोड़सीलाइ ५१ तुघदलचढ़तकँपनजगत अस्त्र

शम्भुगिरिजात ॥ ढूँढ़तअगमअखंडगढ़ लखिन
कीनयहबात ५२ ॥ दानबीरउदाहरण ॥ तिनहैंदर
केदानको कोकरिसकैशुमार ॥ जोपरिरितिचितचाव
सों बिकेबहत्तरबार ५३ ॥ भयानकरसलक्षण ॥ परपो
षकभयभावको सोईभयानकजान ॥ बसतघोरधुनिघोर
लहिसदाहोतहैआन ५४ मुखसूखनहियधकधकीक
म्पादिकअनुभाव ॥ श्यामबरणअरुदेवताकालकहत
कबिराव ५५ ॥ भयथायीभावकोउदाहरण ॥ रावणकैहैंद
शबदन औरबीसहैंबांह ॥ यहसुनिकैहियभयकछूभयो
रामदलमांह ५६ ॥भयानकरसउदाहरण ॥ भभरिरामदल
केभये बदनपीतज्योंधूप ॥ जबरावणकोऔचिका ल
ख्योडरावनरूप ५७ ॥ बीभत्सरस लक्षण ॥ परपोषकघि
नकोसोई रसबभित्सगनाइ ॥ घिनमेंबसतविभावसे नि
तउपजतहैआइ ५८ बिरचिनींदअरुथूकिबो मुखफेरन
अनुभाव ॥ महाकालहैदेवता बरणनीलतेहिगाव ५९
घिनथायीभावको उदाहरण ॥ हरिसुमिरतहींराधिकारंगरू
पगुणआनि ॥ सतभामाकछुमोरिमुख रहीग्वारिनिजा
नि ६०॥ बीभत्सरस उदाहरण ॥ परधनरतसोआसुचिल
नेकनउरलपटाइ ॥ श्यामनिहोरततिहुंतिया नाकसिकोर
तिजाइ ६१ कहुंआमिषकहुंहाड़अरु कहूंचामदरशा
त ॥ तिहिसदनाघरकीनबिधि हमैंबन्योहरिजात ६२
अद्भुत रसलक्षण ॥ परपोषकआश्चर्यजहँ अद्भुतरसव
हिजानि॥नईबातकछुदेखिसुनि उपजतहैनितआनि ६३
बिनबूझेजोचाकिरहै वहैजानिअनुभाव ॥ पीतबरणअ

रुदेवता ब्रह्मचिन्तमैलाव ६४ ॥ आश्चर्यथायीभावकोउदाहर
ण ॥ पूंछजारिकैपवनसुत दीसबलंकजराइ॥ हियेराक्ष
सनकेदियो अचरजसोंधालाइ ६५॥ अद्भुतरसउदाहरण॥
ल्याइसजीवनिमूरिजब ज्यायोलक्ष्मणफेरि॥ सबराक्षस
चक्रितभये यहिअचरजकोंहेरि ६६ जोदलचढ़िलंकाग
यो आयोरावणमारि ॥ सोलरिकैसरिकोंकरैं हैलरिकन
सोंहारि ६७ प्रकटदेखियतजोसकल जगकेपोषनहार॥
ठाढ़ेहाथपसारिकै मांगतबलिकेद्वार ६८ ॥ अथ शांतरस
लक्षण॥ परपोषकनिरवेदको शांतकहतहैसोइ॥ उपजनि
याकीगुरुकृपा देवकृपातेहोइ ६९ क्षमासन्तसुरपूजिबो
योगादिकअनुभाव ॥ श्रीनारायणदेवता चन्दबरणते
हिगाव ७० ॥ निर्वेदथायीभावकोलक्षण ॥ निजानन्दगुण
गानलहि जगतेंहोइउदास॥सोनिरवेदजोशांतको था
यीहैपरकास ७१ ॥ निर्वेदथायीभावशांतकोउदाहरण ॥ जग
आन्योजिहिभजनको अरुफिरिवासोंकाम॥रेमनसुमिर
तहैनहीं एकोदिनातिहिनाम ७२ खिनहरिढूंढ़तआपसे
खिनढूँढ़तअसमान ॥ घरकोभयोनघाटको ज्योंधोबी
कोश्वान ७३ रेमनहाथनलगतकछु जगमेंलोभलगा
इ ॥ ज्योंज्योंफटकैखोखरो त्योंत्योंउड़िउड़िजाइ ७४
रेमनअलिसमभरमकत खोवतदिवसनिकाम ॥ चरण
कमलबिनुरामके पैहैनहिंबिश्राम ७५ ॥ शांतरसउदाहरण॥
होतनकछुन्यारेभये अरुमिलिबैठेसाथ ॥ तिन्हैंभवनब
नएकहै हैजिनकेमनहाथ ७६ सुखदुखबिनकोऊनही
यहनिश्चयजियजोइ॥दिनबीतेनिशिहोतहै निशिबीते

दिनहोइ ७७ लाभहानिकीबिधिदोऊ एकैचितठहराहिं॥
लहैनलखोहैकछू गयेपरेखोनाहिं ७८ प्रभुराचेतेआ
निकै यहगतिकरतिउदोत ॥ भोगयोगमेंहोतहै योगभो
गमेंहोत ७९ ॥ भावनकीसंधिउदयशांतसबलप्रौढ़ोक्तिबर्णनं ॥
अथयेभावनकीसुनो संधिउदयअरुशांत ॥ औरसबैप्रौ
ढ़ोक्तियुति अपनीअपनीभांत ८० ॥ हर्षभाव शंकाभावकी
संधि ॥ बालमवारेसौतिके आवनगयेसुनाइ ॥ हरष
शंककेबीचतिय पैठीसीदरशाइ ८१ ॥ त्रासभावरोष
भावकीविधि ॥ इतप्रभुकीआज्ञानहीं उतरावणबलवान ॥
त्रासरोषकेबीचही थकितभयोहनुमान ८२ ॥ ब्रीड़ा
भावप्रीतिभावकीविधि ॥ इतनिजकुलकीलाजउत मोहन
प्रीतिविचारि ॥ अतिनिशिनेमरुप्रेममधि सन्देहैरहै
नारि ८३ ॥ गर्ब भावोदय ॥ तुमजोहँसिवाबामको बें
दीदीन्हीराति ॥ शीशचढ़ायोसबनके चढ़ीशीशपैजा
ति ८४ ॥ मानभावकीशांतिउदय ॥ पियहँसिहूदैशीशजो
भयोगरबतियआइ ॥ सोकरजावकअरुणता देखत
मिट्योबनाइ ८५ ॥ अंतरिजभावोदयशांत ॥ अटादुरीमेंनिर
खिहरिकौंधाकीसीछांह ॥ चक्रितह्वैसमुझैबहुरिलखिरा
धेकीबांह ८६ ॥ सबललक्षण ॥ मिटयेनिजनिजआदिको
आवैभावजोअंत ॥ बिनुअंतरइककालमें सोईसबल
कहंत ८७ ॥ भावसबलकोउदाहरण ॥ सौकोकुलकीलाज
यहबहुरिदेखिबोताहि ॥ रेमनथिरह्वैकोधनी यहतिय
मिलिहैजाहि ८८ करतप्रथमतुकमेंद्वितिय कैउरशंक
बिशेखि ॥ तृतियमाहिंधृतचौथमें चिंताचितअवरे

खि ८९ ॥ धृतभावकीप्रोढ़ोक्ति ॥ प्रीतमबँसुरीकीसरस सब जगतेकरिध्यान ॥ अधरलगेहरिकेजियत बिछुरेबिछुरें प्रान ९० ॥ स्वकीयाविषयभावशंकाकीप्रौढ़ोक्ति ॥ बिछुरे पियस्वपनेनिरखि तियविदेशअनुमानि ॥ चौंकिपरी थहरीखरी पुरुषदूसरोजानि ९१ ॥ नेमकथनं ॥ सबै प्रछिन्नप्रकाशहै वहैप्रकटउद्दोत ॥ भूतभाविषवर्त्तमान पुनिभयोहोइगोहोत ९२ सबविशेषसामान्यहै लक्षणसकलविशेखि ॥ होइकछूकुललक्षणते सोसमान्यअविरेखि ९३ जोरसउपजैआपसों सोसुनिसतजियजानि ॥ होइऔरकेहेतते सोपरानिसतबखानि ९४ कै लक्षणजहँपाइये तिनमेंअधिकजुहोइ ॥ ताहीकोयहकहतहैं यहबरणतकविलोइ ९५ एकऔरकीप्रीतिअरु तियआगेनरप्रीत्ति ॥ अधमपूज्यसोप्रीतिअरु चोरीसों रसरीति ९६ हांसीगुरुजनसिरीअरु उत्तमबधुउत्साह ॥ चोपबधनिमेंशोकपै रसाभाससबचाह ९७ भावनपूरणहैजहां भावाभासहैसोइ॥कृष्णछांड़िकैप्रीतिज्यों और देशसोहोइ ९८ जैसेनायकनायका इनहूंकेआभास ॥ जेहिइनकीसीरीतिते औरोकहैंप्रकास ९९ पितुसुत बालकबालकाहिं बंधुबंधुसोंनेह ॥ पाईभावजहांदयाबातसल्यरसयेह ११०० ॥ रसजनितरसवर्णनं ॥ होतहास शृंगारते करुणारौद्रतेजान ॥ वीरजनितअद्भुतकह्योबीभत्सहतेभयान १ ॥ रसशत्रुवर्णनं ॥ रिपुविभत्सशृंगारको अरुभयरिपुरसवीर २ ॥ प्रस्तावक ॥ जोजैसो गुणकरतहै तैसोपावतभोग ॥ चषमुखकाजरकेउचित

अधरपानकेयोग ३ बड़ेचातुरनतेसखी बड़ेनपै
यतभाग ॥ दृगनमीतकाजरभयो मांगतमीतसुहा
ग ४ रेमनतेरोजगतमें बिधिकेहाथनिबाह ॥ दुखी
मीनतनधरतहैं नितचुपरीकीचाह ५ मैंजबदेखोमु
रजलौं नीचनरनकीबात ॥ ज्योंज्योंमुखमेंमारिये त्यों
त्योंबोलतजात ६ हैशत्रुनकेभिरतयों होतलघुनको
चाव ॥ ज्योंकूकुरकूकुरलरे कौवापावतदाव ७ ॥
शांतरसकोप्रस्तावक ॥ शशिनधरतनिजदेतसो रंगरूपप
रवेष ॥ त्योंहींआपअवेषपुनि देतसबनकोवेष ८ यों
आयोप्रभुजगतमें जबप्रभुजान्योनांहिं ॥ ज्योंरविको
जानतनादिन रविआवतदिनमाहिं ९ फैलिरह्यो
सबजगतमें देखसकतनहिंकोइ ॥ रबिदिखाइअंधिरैनि
ज्योंसोअबभूठोहोइ १० ऐसीबिधिसबजगतमें प्रभु
कीसदितलखाइ ॥ ज्योंदिनकरप्रतिबिंबगुण दर्पण
देतजनाइ ११ नापावतगुरुज्ञानते निगमअगमते
बात ॥ नारायणकोनामलै पारायणह्वैजात १२
भलेबुरेसबरावरे सुनिलीजैयहनाथ ॥ रचेआपनेहाथ
सों लाजतिहारेहाथ १३ ॥ ग्रंथकीपूरणतावर्णनं ॥ पू
रणकीन्होग्रंथमैं लैमुखप्रभुकोनाम ॥ जाप्रसादतेहो
तहैं सकलजगतकेकाम १४ सुधरचोबरणबिगारहै
कुमतिकुदूषणल्याइ ॥ ठौरठौरलखिरीझिहैं सुमति
सरससरसपाइ १५ लिख्योग्रन्थयहआगेहूँ लोक
नकरिहितबुद्धि ॥ पैअबयासोंशोधिकै ताहिकीजिये
शुद्धि १६ ग्यारहसैचौवनसकल हिजरीसंवत

पाइ ॥ सबग्यारहसैसत्रहैं दोहाराखेल्याइ ११९७ ॥

इतिश्रीहुसेनीवासतीविलग्रामीसैयदबाकरसुतसैयद
गुलामनबीविरचितायांरसप्रबोधग्रन्थसमाप्तम् ॥

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी जनवरी सन १८८० ई०